|  |
| --- |
| 16. November 2025 |
| **33. Sonntag im Jahreskreis C**  |
| Erste Lesung: Mal 3,19-20b; Zweite Lesung: 2 Thess 3,7-12; Evangelium: Lk 21,5-19 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 481, 1+2+4 | Sonne der Gerechtigkeit |
|  | GL 84, 1-4! | Morgenglanz der Ewigkeit  |
|  |  | (nur morgens) |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 164 | Der in seinem Wort uns hält |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 701 | Lasst uns Gott, dem Herrn, lobsingen |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 98, 5-9 |  |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 633, 3 | Hebt euch, ihr Tore |
|  | GL 465 | Meine Hoffnung und meine Freude |
|  | oder |  |
|  | Psalmenlied: |  |
|  | GL 551, 2+3 | Frohlockt dem Herrn |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 4 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Richtet euch auf, und erhebt euer Haupt;* |
|  | *denn eure Erlösung ist nahe.* |
|  |  |
| Credo: | GL 794 | Wir glauben, Herr |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 423 | Wer unterm Schutz |
|  | GL 435, 1+4 | Herr, ich bin dein Eigentum |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 718 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 207 | Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 429, 1+4+5 | Gott wohnt in einem Lichte |
|  | GL 372, 1+4+5 | Morgenstern der finstern Nacht |
|  | GL 213, 1+4 | O heilge Seelenspeise |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 464, 1+4-7 | Gott liebt diese Welt |
|  | GL 96, 1-6!+7 | Du lässt den Tag (nur abends) |
|  | GL 380, 6+7! | Du, des Vaters ewger Sohn  |
|  | GL 784, 1-3 | Meine Zeit |
|  | GL 542 | Ihr Freunde Gottes |